International Journal of Research in Social Sciences And Humanities http://www.ijrssh.com/
(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. III, Jul-Sep ISSN: 2249-4642

रामचरितमानस के बालकाण्ड में गुरु–शिष्य संबंध

*डॉ0 सुरेन्द्र महतो , **अजय कुमार शर्मा
*विभागाधयक्ष शिक्षाशास्त्र ,
शिवा इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज गाजियाबाद।
E-mail : s.mahto73@gmail.com
**अनुसंधाता, मेवाड विश्वविद्यालय चित्तौडगढ़, राजस्थान
पता–149/1, चिरंजीव विहार,गाजियाबाद
E-mail : ajaysharma1170@gmail.com

रामचरितमानस भक्तिकालोन रचनाआ म पमख ह, जहा¡ भारतोय समाज का आदश झलकता ह। इस महाकाव्य पर साहित्यक दष्टि स अनक शाधा हए ह। किन्त शक्षिक दष्टि स इनको सख्या नगण्य ह। इस महाकाव्य म आठ काण्ड ह, जिसम पथम बालकाण्ड अपना अलग हो महत्व रखता ह। शाधाकत्ता न अपन गहन अधययन क पश्चात इस काण्ड म निहित तलसोदास क गरु–शिष्य सम्मत विचारा का अपनो मति अनरूप विवचन करत वक्त यह दखा ह कि गरु का शिष्य क पति स्नह एक माता–पिता स बढकर ह। वहो शिष्य का गरु क पति समपण अपन पाणा स भो बढकर ह। इतना हो नहो जहा¡ गरु शिष्य क लाकिक तथा पारलाकि कत्याण क लिए सदव निदशित करता ह, वहो शिष्य पातः चरण वन्दन स दिन–चया पारभ कर शयन पयन्त सवा म तत्पर रहत हए सभो पकार क निदशा का पालन अपना कतव्य समझकर करता ह।

गुरु शब्द 'गु' का अंधाकार तथा 'रु' का अर्थ है प्रकाश अर्थात् जो हमें अंधाकार से प्रकाश की ओर अग्रसर करे उसे 'गुरु' कहते हैं। ऐसा वैयाकरणों का मत है।

'अद्वयतारकोपनिषद' में गुरु शब्द के अर्थ को इस प्रकार व्यक्त किया गया है– ''वेदादि से सम्पन्न आचार्य, विष्णुभक्त, मत्सरतारहित योग्य ज्ञाता, योगनिष्ठा वाला, योग्यात्मा, पवित्र, गुरु–भक्त, परमात्मा में विशेष रूप से लीन इन लक्षणों से युक्त व्यक्ति ही गुरु कहा जाता है अर्थात् गुरु शब्द में सर्वगुण सम्पन्नता व्याप्त है। गुरु में गुरुता, महत्व, पवित्रआत्मा, असाधारण योग्यता सभी कुछ दृष्टव्य होता है। 'कादम्बरी' में गुरु के गुणों का वर्णन किया गया है। ;षि जाबाल के गुणों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है। **''यह मुनि तजों में अग्रणी, करुणा रस का प्रवाह, संसार रुपी समुद्र से पार जाने के लिए कुल्हाड़ी, संतोष का सागर, सिद्धि मार्ग में शिक्षक, अशुभ ग्रहों का शान्त कता, प्रजा का चØ, धर्म की धवजा, आसक्ति रुपी पल्लवों के लिए दावानल, Øाधा रहित, नर्क द्वारों के बंधान, शक्ति के आश्रय, अभिमान रहित तथा सुखों से परागमुख हैं।''** मानव जीवन का कोई भी क्षेत्रहो उसमे स्वामित्व प्राप्त करने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की खोज करनी पड़ती

है जो इस क्षेत्रमें पूर्ण ज्ञान रखता हो। यह पूर्ण रुपी केवल गुरु होता है। गुरु ही साधारण व्यक्तियों का अज्ञानान्धाकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

शिष्यस्ते·हं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।''[1] अर्थात् मैं आपका शिष्य हू¡। अतः आपकी शरण में आए हुए मुझको शिक्षा दीजिए। वास्तव में पूर्णतया गुरु की शरण में समर्पित हो जाए, वह शिष्य है।' सत्यार्थ-प्रकाश में शिष्य वही है जो सत्य, शिक्षा और विद्या को ग्रहणकरने योग्य धर्मात्मा, विद्याग्रहण की इच्छा रखने वाला तथा आचार्य का प्रिय होता है।[2] शिष्य अपने में पूर्ण है जो वास्तविक रुप से गुरु शिष्य संबंधा को उद्घाटित करता है। जो शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करके उनकी आशावादात्मक वाणी को ग्रहण करता हुआ उनके हदय में समाविष्ट हो जाता है वही सच्चा शिष्य है। 'नारद पुराण' में शिष्य की तल्लीनता के विषय में कहा गया है कि जो विद्या की चाहना रखने वाला है और विद्या प्राप्त करना ही जिसके जीवन का एकमात्रप्रयोजन है वह एक गरुड़ पक्षी हंस के समान समुद्र में चला जाता है।'' तात्पर्य यह है कि विद्या का अर्थी सुदर और दुर्गम स्थानों में भी पहच जाता है क्योंकि उसका तो एकमात्रलक्ष्य विद्या की प्राप्ति करना ही होता है। जो विद्यार्थी अपना रहन-सहन सीधा-सादा और सदाचारपूर्ण रखता है वही विद्या की प्राप्ति करता है।

''भारतीय ज्ञान साधाना के क्षेत्रमें ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान और शब्द का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञाता होता है- गुरु एवं शिष्य ज्ञेय ब्रहम तथा ज्ञान को प्राप्त कराने का साधान है। संस्कृत के शब्दकोष कल्पद्रुम[3] के द्वारा शिष्य की उत्पति इस प्रकार की गयी है। शास् + क्यप्। शास् शब्द क्यप् प्रत्यय मिलाकर शिष्य शब्द की उत्पति मानी गयी है। शास् का अर्थ होता है- शासन करना, आज्ञा दना, आशिवाद देना, उपदेश देना, समादिष्ट करना आदि। भारतीय वैदिक संस्कृति के अनुसार गुरु पिता/माता तुल्य तथा शिष्य पुत्र/पुत्री तुल्य व्यवहार करता है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में गुरु-शिष्य परंपरा आदर्श और परमोदाता रुप में स्थापित है। मानस कथा का आरंभ ही गुरु की व्यावहारिक महता से होता है। गुरु वशिष्ठ परम ज्ञाना और महान ;षि थे। वे रघुवंश के कुलगुरु होने के कारण प्रसि) हैं। गुरु वशिष्ठ का विवेक और ज्ञान उच्च कोटि का था। उनमें तीनों कालों को जानने और समझने की अद्भुत क्षमता थी। ''वशिष्ठ को शंकर का मानस युग कहा गया है। इन्द्रियों को वशाभूत कर लेने से इनका नाम वशिष्ठ पड़ा था।''

एक बार राजा दशरथ का मन ग्लानि से भर उठा कि मेरे कोई पुत्रनहीं है। इस समस्या के निवारण हेतु राजा दशरथ अविलम्ब ही गुरु के आश्रम गए और उनके चरणों को प्रणाम कर बहत विनय की -

एक बार भूपति मन माहिं। मैं गलानि मोरें सुत नाहीं।।

गुरु गृह गयउ तुरत पहिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला।। 3 /173

राजा ने विश्वास पूर्वक अपने मन की बात गुरु वशिष्ठ जी से कही। त्रिकालदर्शी गुरु ने अपने शिष्य के जीवन के निराशा के आवरण को छिन्न-भिन्न कर दिया। राजा दशरथ के उज्जवल भविष्य की ओर संकेत करते हुए गुरुवर कहते हैं -

निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहिबसिष्ठ बहुबिधि समझायउ।

धारहु धीर होइहहिं सुतचारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी।। 4 /174

समर्थ गुरु वशिष्ठ जी श्रृंगी ;षि को बुलवाकर पुत्रकामेष्टी यज्ञ करवाते है जिससे कि राजा दशरथ की पुत्रप्राप्ति की लालसा पूर्ण हो सके-

सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलाव।। पुत्रकाम सुभ जग्य करवा। 5 /174

एक बार गुरु वशिष्ठ ही राम सहित चारों भाईयों का चूड़ाकर्म संस्कार सम्पन्न कराते हैं-

चूड़ा करन कीन्ही गुरु जाई।
बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ।। 6 /186

धीरे-धीरे उपनयन संस्कार का समय आया। गुरु वशिष्ठ जी ने उन चारों भाईयों का विधिवत सांगोपांग उपनयन संस्कार किया। तत्पश्चात वे कुलगुरु वशिष्ठ के पास विद्याधययन के निमित गए अल्पकाल में ही उन्हें समस्त विद्याए स्वत: प्राप्त हो गइ-

भए कुमार जबहिं सब भ्राता।

दीन्ह जनेÅ गुरु पितु माता।।

गुरुगृह¡ गए पढ़न रघुगई।

अलप काल विद्या सब आई।। 7 /187

चूकि विद्या विवेक की जननी है अत: राम व लक्ष्मण गुरु द्वारा दिए गए विद्या संस्कार से विद्या, विनय, गुण और शील में निपुण हैं-

विद्या विनय निपुन गुन सीला। 8 /187

प्रात: काल जगकर राम अपने गुरु व माता पिता के श्री सम्पन्न चरणों में मस्तक नवाते हैं और उनकी आज्ञा सिरोधार्य कर नगर के कार्य सम्पन्न करते हैं। ऐसा देखकर गुरु वशिष्ठ व माता-पिता अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त होते हैं-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।

मात पिता गुरु नावहिं माथा।।

IJRSSH

आयुस मागि करहि पुर काजा।

देखि चरित हरषई मन राजा।। 9/188

महर्षि विश्वामित्र धर्म की साक्षात मूर्ति हैं। ये बलवानों में श्रेष्ठ है। विद्या के द्वारा ही ये संसार में सर्वोपरि है। तपस्या के ये विशाल भण्डार है। चराचर प्राणियों सहित तीनों लोकों में जो नाना प्रकार के अस्त्रहैं, उन सबके ज्ञाता हैं।

अयोधया के यशस्वी राजा दशरथ के दरबार में यज्ञ रक्षा हेतु विश्वामित्र, राम और लक्षमण को मांगते हैं। राजा इस प्रस्ताव से चिंतित हो जाते हैं। उनकी शंका का निवारण गुरु वशिष्ठ जी करते हैं जिससे राजा का संदेह मिट जाता है।

;षि विश्वामित्रने राम को विद्या, विवेक का अतुलित भण्डार समझते हुए भी ऐसी विद्या दी जिससे भूख प्यास न लगे और शरीर में अतुलनीय बल व तेज का प्रकाश हो–

तब रिषि निज नाथहिं जिय चीन्ही।

विद्यानिधिा कहु विद्या दीन्ही।।

जाते लाग न छधा पिपासा।

अतुलित बल तनु तेज प्रकासा।। 10/191

विश्वामित्रको अपने परम प्रतापी शिष्य राम की शक्ति व क्षमताओं पर अगाधा विश्वास है इसी कारण विश्वामित्रअपने प्रिय शिष्य को सब अस्त्र–शस्त्रअल्पकाल में समर्पित कर देते हैं और अपने आश्रम में लाकर कंद मूल और फल का भोजन कराते हैं–

आयुधा सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।

कन्द मूल फल भोजन दीन्ही भगति हित जानि।। 11/209 दोहा /192

राम और लक्ष्मण ने अपने पराकम और गुरु कृपा से विश्वामित्रके यज्ञ की रक्षा की तथा लोकमंगल को अभय प्रदान किया। तदन्तर गुरु विश्वामित्रने अपने प्रिय शिष्य राम से कहा कि अब आप धानुष यज्ञ हेतु मेरे साथ चलें। राम और लक्ष्मण सहर्ष गरु के आदेश का पालन करते हुए धनुष यज्ञ के लिए चल देते हैं।

तब मुनि सादर कहा बुझाई ।

चरित एक प्रभु देखिअ आई।।

धानुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा।

हरषि चले मुनिवर के साथा।। 15/193

IJRSSH

गुरु के प्रति सम्पूर्ण समर्पण आदर्श शिष्य का सर्वोत्कृष्ट गुण होता है। जब श्रेष्ठ मुनि विश्वामित्रशयन करते हैं तो संस्कार सिंध दोनों शिष्य अपने गुरु के चरण दबाते हैं-

मुनिबर सयन कीन्हीं जब आई।

लगे चरन चापन दोउ भाई।। 10/193

इस प्रकार दो आदर्श शिष्य प्रेमपूर्वक अपने आराधय गुरु की सेवा करते हैं। मुनिवर के बार-बार आज्ञा देने पर शयन के लिए जाते हैं-

तेई दोÅ बंधु प्रेम जनु जीते।

गुरु पद कमल पलोट प्रीते।।

बार-बार मुनि अज्ञा दीन्हीं।

रघुबर जाई सयन तब कीन्हीं।। 14/206

प्रात: काल होने पर आदर्श शिष्य राम अपने गुरु के जगने से पूर्व ही जाग जाते हैं-

गुरु तें पहिलेहिं जगतपति जागे राम सुजान। 15/206/226 दोहा

सच्चा गुरु त्रिकालदर्शी होता है। वह जानता है कि उसके शिष्य को कब, कैसे और कहा क्या करना है। उसका परिणाम क्या होगा, गुरु अवगत होता है-

बिस्वामित्रसमय सुभ जानी। बोले अतिसनेहमय बानी।

उठहु राम भंजहु भवचापा। मटहु तात जनक परितापा।। 16/230

आज्ञाकारी शिष्य अपने गुरु की अपेक्षाओं के अनुकूल कर्म करते हुए लक्ष्य संधाान करता है। राम विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर व उनके चरणों में नमन करते हुए तथा हर्ष-विषाद की सीमा से परे धानुषभंजन हेतु आगे बढ़ते हैं-

सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा।

हरषु विषादु न कछु उर आवा।। 17/231

शिष्य कर्मभूमि में कोई भी कर्म करे लेकिन उसका चित रूपी हंस सदैव गुरु के चरण मानसरोवर में विचरता रहता एक पल के लिए शिष्य के चित का गुरु के चरणों से विग्रह नहीं होता- राम धानुष यज्ञशाला में धनुष उठाते समय मन ही मन अपने गुरु को सादर प्रणाम करते हैं-

गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा।

अति लाघव¡ उठाइ धानु लीन्हा।।

18/236

IJRSSH

गुरु को अपने शिष्य के बौ)िक बल, बाहुबल, कौशल व पराØम आदि पर पूर्ण विश्वास होता है कि उसका शिष्य शत्रुओं को पराजित करने की क्षमता रखता है। शिष्य से कभी-कभी अनजाने कोई त्रुटि भी हो जाती है तो वह सुधार हेतु गुरु के पास ही जाना उचित समझता है। लक्ष्मण ने कुछ ऐसा ही किया-

सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम।
गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम।। 19/250/278 दोहा

एक आदर्श शिष्य सदैव अनुशासन की डोर से बधा होता है। उसका प्रत्येक कार्य अनुशासन का प्रतिबिम्ब होता है। जब राम व लक्ष्मण को पता चलता है कि आदरणीय पिताजी भी यहा¡ आए हुए हैं तो उनके दर्शनों की लालसा âदय सागर में हिलोरे लेती है लेकिन गुरु के समक्ष अपनी इन भावनाओं को व्यक्त करते हुए संकोच का अनुभव करते हैं।

सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहिं। पितु दरससन लालच मनमाही।।

बिस्वामित्रबिनय बड़ि देखी। उपजा उर संतोषु बिसेषी।। 20/273

अपने कुल गुरु पूजनीय वशिष्ठ जी के प्रति राम और लक्ष्मण के âदय में अपार आदर-सम्मान का भाव उमड़ रहा है। दोनों भाई विनम्रतापूर्वक गरु वशिष्ठ के श्री चरणों में शीश नवाते हैं तथा कुलगुरु उन्हें अपने âदय से लगाकर अपार आनंद की अनुभूति करते हैं।

पुनि वशिष्ठ पर सिर तिन्ह नाए।

प्रेम मुदित मुनिबर उर लाए।। 21/274

विवाहोपरान्त अयोधया आने पर चारों भाई प्रात:काल जागकर अपने कुलगुरू वशिष्ठ जी व विश्वामित्रजी के चरणों में नित्य वंदना करते हैं। राजा दशरथ गुरु वशिष्ठ व विश्वामित्रका विशेष रूप से सम्मान करते हैं-

बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता।

पाइ असीस मुदित सब भ्राता।।

पुनि बसिष्ठ मुनि कौसिकु आए।

सभग आसनन्हि मुनि बैठाए।। 22/322

प्रेमवश गुरु अपने शिष्य की कोमल भावनाओं की अवहेलना नहीं कर पाते हैं, अर्थात गुरु भी शिष्य के प्रेम पाश में ब¡धा जाते हैं। विश्वामित्रअब अपने आश्रम जाना चाहते हैं लेकिन प्रिय राम के स्नेह सने आग्रह को ठुकरा नहीं पाते और कुछ दिन महल में ठहर जाते हैं-

बिस्वामित्रचलन नित चहहीं।

राम सप्रेम बिनय बस रहहीं।। 23/323

माता-पिता की भी यही अभिलाषा होती है कि उनकी संतान पर गुरु के आशीवाद की वृष्टि होती रहे। गुरु के दर्शन का लाभ भी समय-समय पर मिलता रहे। विश्वामित्रके विदा होने पर दशरथ व राम-लक्ष्मण यहीं चाहते हैं कि गुरु कृपा की शीतल छाया हम पर सदैव बनी रहे उनके दर्शनों का लाभ हमें मिलता रहे।

करब सदा लरिकन्ह पर छोहू।

दरसनु देत रहब मुनि मोहू।। 24/324

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि तुलसीदासकृत रामचरितमानस के बालकाण्ड में एक ओर जहा¡ राजा दशरथ नि:संतान दुख से दुखी हैं उन्हें विश्वास है कि हमारे गुरु हमें इस दुख से मुक्ति दिला सकते हैं और होता भी ऐसा ही है। वशिष्ठ जी कौशल नरेश की चिंता को समझ कर कौशल ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की कल्याण भावना से दशरथ का पथ प्रशस्त करते हैं। आगे विश्वामित्रके प्रति राम और लक्ष्मण का समर्पण तथा विश्वामित्रका दोनों भाईयों के प्रति अतुलनीय स्नेह, इतना हीं नहीं चारों भाईयों का गुरु वशिष्ठ के प्रति समर्पण व गुरु-शिष्य के मधुमय और प्रगाढ़ सम्बंधा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त भी कई एक घटनाए¡ और भी हैं जिन्हें स्पष्ट किया जा सकता है।

अत: बालकाण्ड में गुरु-शिष्य संबंधा अन्योन्याश्रित, मधर, प्रतिसमर्पण, प्रगाढ़ व अनुपम हैं, ऐसा अधययन के Øम में प्राप्त हुआ है।

IJRSSH

संदर्भ ग्रन्थ

1ण वें ज्ञतपीदवए त्म्स्प्ळप्व्छ ज्भ्म्व्स्ळल्ए 1905ए टमदांजमेूंत च्तमेए डनउइंपण

2ण ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद - भक्ति वेदाना बुक ट्रस्ट - हरे कृष्ण धााम, मुम्बई - संस्करण - 42, फरवरी - 2012

3ण शर्मा आनंद दयानंद दिग्विजयम महाकाव्यम्, 1910 इलाहाबाद इण्डियन प्रैस

4ण शर्मा रामअवतार, कल्पद्रुम कोश, भाग - 1 साहित्य, ऑरियन्टल शोधा संस्थान बारादारो (ठंतंकंतव)

5ण पोद्दार, हनुमान प्रसाद, रामचरितमानस संस्करण - 141 सम्वतः 2055, प्रकाशन - गीता प्रेस गोरखपुर ¼उ0प्र0½

3/173, 4/174, 5/174, 6/186, 7/187, 8/187, 9/188, 10/191, 11/209, दोहा/192, 12/193, 13/193, 14/206, 15/206/226 दोहा, 16/230, 17/231, 18/236, 19/250/278 दोहा, 20/273, 21/274, 22/322/23/323, 24/324

IJRSSH